श्री गणेशाय नमः
ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः
ॐ क्लीं कृष्णाय नमः
ॐ नमः परमगुरवे ॥

पार्वती तपश्चर्या ।

(पृष्ठभूमि ।)

पर्वतराज हिमालय युग-युग से भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का सबल स्रोत रहा है। तपःपूत हिमांचल के आँचल में पल्लवित पावन कथाओं में 'पार्वती तपश्चर्या' अन्यतम एवं श्रेष्ठ है। पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार पितरों के मनःसंकल्प से समुत्पन्न मेना एवं स्वयं हिमालय उनके पिता थे। प्रस्तुत संगीत या नृत्यनाटिका सुरभारती के चतुर चितेरे कविवर कालिदास के सुविख्यात महाकाव्य 'कुमारसम्भवम्' के प्रारम्भिक ५ सर्गों के मुख्य आधार पर विरचित होने पर भी उसकी कुछ मौलिक अवधारणाएं हैं। साथ ही कालिदासेतर संस्कृत साहित्य भी इसका प्रेरणास्रोत है। फिर भी अनेक स्थलों पर कालिदास के श्लोक यथावत् प्रयुक्त हुए हैं।

शिव ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के आधारभूत विराट्पुरुष हैं। भगवती उमा (जो ब्रह्मविद्या भी कहलाती हैं) गौरी, रुद्राणी अथवा पर्वतराजसुता = पार्वती उनकी अभिन्न चेतन शक्ति हैं। शिव, शंकर अर्थात् विश्वकल्याणकारी हैं, महेश्वर हैं। समुद्रमन्थन से विनिर्गत विविध रत्नप्रचय देवताओं ने ग्रहण किये तथा अमृतपानकर अमरत्व प्राप्त किया, किन्तु देवशिरोमणि महादेव ने विषपान किया। विषपान करके भी उसे कण्ठ में ही अवरुद्ध कर उसे पाचनतन्त्र एवं रसवाहिनी नलिकाओं से पृथक् रखकर वीर्य एवं मस्तिष्क में न आने देना यह कालजयी महाकर्मी शंकर के अतिरिक्त भला कौन कर सकता है। जगत्पावनी, सकलसंतापहारिणी, विष्णुपदनखविनिर्गता गंगाधर जयजूटवासिनी मंदाकिनी एवं पीयूषवर्षी चन्द्रमौलि शंकर के अभिन्न सहचर हैं। एक जगत्पावक अजस्ररसस्रोतस्विनी है, तो अपर 'चन्द्रमा मनसो जातः' इस वेदोक्ति के अनुसार, विराट्पुरुष के ~~मानस~~ मनःसमुद्र से समुद्भूत अमृतागार। सामान्य समुद्रजन्य अमृत से कहीं अशिवत्व की आशंका भले ही हो, किन्तु विराट् मनोजात अमृत भला शिवभिन्न कैसे हो सकता है?

जिसके विशाल भाल पर अनन्त सुधामय अन्तर्वर्ती चिन्तन-केन्द्र के

बाह्य प्रतीक के रूप में विकार के मानस-सिन्धु की दिव्य सुधा सुधाकर के रूप में सुशोभित है; उसे न तो ~~[illegible]~~ समुद्रमन्थन समुद्भूत सुधापात्र की अपेक्षा है; नहीं ससीम गरल निःसीम अमृत पर प्रभुत्व स्थापित कर अकल्याणकारी प्रभाव दिखा सकता है।

~~अतः~~ विश्वकल्याण का साकार विग्रहधारी शिव भी, बिना इ के शव ही बन जाता है "अकारः शिव इत्युक्तः, इकारः शक्तिरुच्यते ~~शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्~~ ' मातृकादर्शन इस सिद्धान्तानुसार, शिवत्वसाधना हेतु शिवा (पार्वती) का परिणय अपरिहार्य है। अतः शिवत्व की रक्षा हेतु उनकी पालनी शक्ति पार्वती का परिणय होता है।

शिवपार्वती का परिणय ~~है~~ भौतिक लाभकारी लोलुप वासनामूलक तत्व का प्रतीक ~~है~~ नहीं है, तभी तो सृष्टिमूल काम का सात्विक रूप धारण कर उसे अमर बनाने का संकल्प लक्ष्य (दृष्टि) लेकर ~~अ~~ कामाक्षीत्व की सार्थकता प्रदान करती है। तमःप्रधान

केवल भौतिक आकर्षण की वासनाओं के प्रतिफल का प्रतीक काम का भौतिक शरीर पार्वती के समक्ष, शिवपार्वती परिणय की पृष्ठभूमि के प्रारम्भ में ही शिव की योगाग्नि द्वारा भस्म हो जाता है और सात्विक कामसाधना के परिणाम स्वरूप पार्वतीतपश्चर्या की परिणति में महाकाल शिव को पार्वतीपरिग्रहण हेतु बाध्य होना पड़ता है।

विश्वमंगल हेतु शिव-शिवा (पार्वती) का पौराणिक आख्यान जहाँ भक्तों एवं अध्यात्मवेत्ताओं के लिये हृदयरञ्जन के लिये भक्तिप्रवण सरसता व ~~[illegible]~~ रूपकमयी भाषा में ~~[illegible]~~ सात्विक दृष्टि का विकासकारी है, वहीं विश्व की विकास परम्परा में पराशक्ति की भाँति, शिवत्वमूलक चेतना का विकास करने वाली नारी शक्ति की वरेण्यता का भी व्यञ्जक है। 'अग्निसोमात्मकं जगत्' इस तथ्य के रहस्यवेत्ताओं ~~[illegible]~~ समस्त कृत्य अग्निप्रधान व नारी सृष्टि सोमतत्वप्रधान है। की दृष्टि में, दाहकधर्मप्रधान अग्नितत्वमय पुरुष शारीरिक दृष्टि से नारी की अपेक्षा अधिक सबल है, किन्तु जीवन को सरस दिशाबोध देनेवाली, सृजनात्मक मानसिक शक्तियों में सोमप्रधान नारी पुरुष से अधिक धनी है। विश्वकल्याण के लिये शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मनोबल की महत्ता कहीं अधिक है। अतः इस दिशा में अधिकाधिक सफलता अर्जित करने के लिये व्यावहारिक स्तर पर उदात्तभावसम्पन्न नारीशक्ति के सहयोग की महत्त्वपूर्ण स्वीकृति अनिवार्य है। विकृत समाज में मंगलसृष्टि के लिये विश्वकल्याण के साकार विग्रहधारी शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप

शाक्तागमतन्त्रों
स्वरूप का वरण करना ही होगा। शिवत्व की सार्थकता शक्तियुक्त होने पर ही चरितार्थ होती है — "शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।" (सौन्दर्यलहरी १)

व्यष्टि और समष्टि तथा भौतिक एवं आध्यात्मिक जगत् में सर्वत्र एक व्यापक समानता है। फलतः अलौकिक आधारभूमि पर स्थापित सत्य को लौकिक धरातल पर भी भुठलाया नहीं जा सकता।

।निर्माण के प्रत्येक धरातल पर सृष्टिमूल काम की व्यापक भूमिका है। किन्तु काम का उच्छृंखल वासनामूलक तामस रूप देवत्व की भाँति मनुष्यत्व से भी च्युत करने वाला है। उसके सात्विक रूप की प्रतिष्ठा द्वारा विश्वकल्याण के संकल्प को साकार करने के लिये प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से असुर (दुर्विचार, कुसंस्कार एवं उनके आश्रयभूत प्राणी) — विनाशक — क निर्माणभूमि के अमोघ प्रेरणास्रोत के रूप में नारी-शक्ति की महती भूमिका अवश्य स्वीकार्य है।

'पार्वतीतपश्चर्या' इसी शिवत्वमूलक रहस्यमहिमा का भावप्रवण आख्यान है।

नलिनी शुक्ला

पर्वतराज हिमालय युग-युग से भारतीय साहित्य एवं संस्कृति का सबल प्रेरणास्रोत रहा है। तपःपूत हिमाँचल के आँचल में पल्लवित पावन कथाओं में 'पार्वती तपस्या' अन्यतम एवं श्रेष्ठ है। ~~प्रस्तु~~ पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार पितरों के मनःसंकल्प से उत्पन्न मैना पार्वती की जननी और स्वयं हिमालय उसके पिता थे। प्रस्तुत गीतनाटिका सुरभारती के चतुर चितेरे कविवर कालिदास के सुविदित महाकाव्य 'कुमारसम्भवम्' के ही ~~नाट्य~~ ही एक अंश पर आधारित है, जिसके नाट्यरूपान्तरण की दृष्टि से अनेक स्थानों पर आवश्यक परिवर्तन किये गए हैं।

कथासार

आभिजात्य गुण सम्पन्न, अनिन्द्य सुन्दरी, ~~पार्वती~~ सुकुमारी, पार्वती में मन एवं शरीर ~~दोनों~~ उभय दृष्टि से यौवनोचित गुण विकसित हो चुके थे। ~~अपने सम~~ ~~माता पिता के सम~~ अपनी सखियों के साथ सहज केलिनिरत पार्वती के समीपस्थ माता-पिता परस्पर उसके विवाह हेतु वर खोजने की चर्चा कर रहे थे। तभी त्रिकालदर्शी देवर्षि नारद अचानक हिमालय के घर आए और पूर्व जन्म में दक्षसुता के रूप में ~~उमा~~ (~~पार्वती~~) शरीर त्यागने वाली ~~जगदम्बा~~ पार्वती घटना का निर्देश करते हुए भविष्यवाणी की कि पार्वती जगदीश्वर शिव की अर्द्धांगिनी पत्नी होगी।

~~हिमालय शंकर नित्य~~ हिमाद्रि के रमणीय शिखर-~~आश्रम~~ वन में देवाधिदेव ~~को~~ तपोनिरत रहा करते थे अतः स्वयं अपनी ओर से पुत्री के वरण हेतु प्रस्ताव रखने उसके ठुकराए

अपनी साधना

जाने की संभावनावश हिमालय ने पुत्री को ही शिव के समीप जाकर उनकी ~~आवश्यक~~ सेवा एवं आराधना करने ~~को~~ निर्देश ~~परामर्श~~ दिया।

~~परम धीर, गम्भीर एवं निर्विकार शंकर ने बालकी पार्वती को तपश्चर्या में बाधक नहीं समझा और उसे अपने आश्रम में निवास की सेवा करने की अनुमति प्रदान कर दी।~~

~~अनिन्द्य सुन्दरी पार्वती निरतिशय सुखों में पालित पुत्री~~

भोग विलास से विरत समाधिशील शंकर के साथ; निरतिशय सुखों में पालित पुत्री के परिणय की वार्ता को सुन कर मैना का मातृसुलभ ~~कक~~ कोमल हृदय व्याकुल हो उठा। देवर्षि नारद की गूढ़ार्थ वाणी के प्रति अनभिज्ञतापूर्वक उदासीनता दिखलाते हुए मैना ने शिवपार्वती के परिणय प्रस्ताव का प्रतिरोध किया किन्तु हिमालय ने, महर्षियों की वाणी को अव्यर्थ बतलाते हुए शिवाराधनार्थ यत्नशीला सुता को अपने लक्ष्य से विचलित न करने का परामर्श दिया।

परम धीर गम्भीर एवं निर्विकार शंकर ने भी पार्वती को अपनी तपस्या में बाधक नहीं समझा और उसे सखियों सहित अपने आश्रम में निवास व सेवा करने की अनुमति प्रदान कर दी।

अनिन्द्य सुन्दरी, ~~पार्वती~~ सुकुमारी गिरिराजकुमारी (पार्वती) ~~की~~ हृदय में अभीष्ट वर प्राप्ति का स्वप्न सँजोए ~~कर~~ हुए शिवार्चन के लिये पुष्प चयन करती, उनकी समाधि वेदी को सम्मार्जन करती तथा शिव के नित्यकर्म सम्पादन के लिये जल एवं कुशों को ले आती ~~थी~~। और श्रद्धापूर्वक सेवा करते हुए शंकर के भाल के चन्द्र की अमृत किरणों से प्रभावित हो ~~का~~ जाती।

~~[illegible]~~

भारतीय संस्कृति और साहित्य को अनेक दृष्टियों से प्रेरित एवं प्रभावित करने वाले पर्वतराज हिमालय के रमणीय अङ्क में जिन पवित्र कथाओं का पल्लवन हुआ है — ~~उनमें से~~ उनमें "पार्वती तपस्या" अन्यतम एवं श्रेष्ठ है। कथानायिका पार्वती का जन्म और विकास इसी हिमालय में हुआ था। पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार पितरों के मनः सङ्कल्प से उत्पन्न मेना, पार्वती की जननी और स्वयं हिमालय उसके पिता थे।

हिमाचल में जब शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से पार्वती युवती हो गई थी और उसमें अपने माता-पिता के आनुवंशिक गुणों — सौन्दर्य तथा धैर्य — के साथ-साथ अन्य भी प्रायः समस्त स्त्रीजनोचित गुणों का विकास हो चुका था, तब एक दिन अचानक देवर्षि नारद हिमाचल के घर आते हैं। त्रिकालदर्शी देवर्षि नारद ने जैसे ही इस अनिन्द्य सुन्दरी पार्वती को देखा, वैसे ही उन्होंने भविष्यवाणी की कि यह कन्या शङ्कर की अर्धाङ्गिनी पत्नी होगी। नारद का वचन सत्य ही था, क्योंकि विगत जन्म की सती, वर्तमान जन्म में पार्वती होकर भी वस्तुतः शंकर की ही पत्नी हो सकती थी।

इच्छारहित जब शिव जी ने उसी हिमालय के रम्य शिखर पर किसी अनिर्वचनीय कामना से तपश्चर्या आरम्भ कर दी, तब हिमालय ने भी ~~शिव को~~ उनको देवस्वरूप अतिथि के योग्य पूजा करके जया और विजया नामक दो सखियों के साथ पार्वती को उनकी सेवा में नियुक्त कर दिया। शिव ने सुन्दरी पार्वती को अपनी तपश्चर्या में बाधक नहीं समझा, क्योंकि वे धीर थे। धीर जन विघ्नों के मध्य में ही निर्विकार भाव से अपनी साधना करते हैं।

सुकुमारी सुन्दरी पार्वती भी शिव के पूजन के लिए पुष्प चुन लाती, उनकी समाधि वेदी को भली भाँति स्वच्छ रखती तथा उनके नित्य कर्म के लिए जल एवं कुशों को ले आती थी। इस प्रकार शिव की सेवा में तत्पर वह सुकुमारी, शंकर के भालस्थित चन्द्रमा की अमृतमयी किरणों से अपनी थकान को मिटा लेती और प्रतिदिन श्रद्धा से उनकी सेवा-शुश्रूषा करती रहती थी।

(प्रथम ~~[illegible]~~ सर्ग तक)

एकबार हिमालय के प्राकृतिक वातावरण में चराचर विश्व को चंचल कर देने वाले कामोद्दीपक वसन्त ने प्रवेश किया, ~~किन्तु~~ शीतल मन्द एवं सुरभित पवन प्रचालित हुआ, अप्सराएँ उन्मत्त ~~[illegible]~~ अप्सराओं के पायल एवं नूपुर बज उठे, वे ~~[illegible]~~ गाती हुई नाच उठीं, परन्तु शंकर अपनी समाधि में अविचल ही रहे। ठीक ही है — चित्तक्षोभ के हेतु आत्म संयमियों को क्षुब्ध नहीं कर सकते। यद्यपि नन्दी ने अपने शासन से समग्र वातावरण को नीरव एवं निश्चल कर दिया था फिर भी काम किसी प्रकार छिपकर शिव के समाधि मंडप में घुस गया। भगवान शिव वीरासन मुद्रा में अपने शरीर के पूर्वार्ध भाग को सीधा एवं स्थिर किए हुए अविचल समाधि में लीन थे।

समाधिमग्न शंकर के अतिसमीप पहुँचकर काम आतङ्कित होकर काँप उठता है और उसका धनुष-बाण उसके हाथ से अनजाने ही गिर जाता है। उसी समय मानों अपने अलौकिक सौन्दर्य से उस कामदेव के नष्टप्राय बल को पुनरुज्जीवित करती हुई-सी अपनी विजया और मालती नामक सखियों के साथ प्रकट हो जाती है। उसे देखते ही एक बार पुनः कामदेव में जितेन्द्रिय महादेव पर विजय पाने की लालसा जागरित हो जाती है।

इसीबीच शंकर अपनी समाधि से जागते हैं और प्राणायाम के विसर्जनपूर्वक अपना वीरासन त्याग देते हैं। पार्वती उनकी सेवा में पुष्पादि अर्पित करती है और साथ ही एक माला भी उन्हें ~~[illegible]~~ भेंट की। माला को ~~ग्रहण~~ अपने हाथों से ग्रहण करने की मध्य वेला में ही उपयुक्त अवसर समझ कामदेव उन पर सम्मोहनास्त्र का प्रयोग कर देता है। शिव क्रुद्ध अधीर हो उठे और अपने समस्त नेत्रों से उमा ~~[illegible]~~ के मुखसौन्दर्य का पान करने लगे। ~~पार्वती~~ तरुणी ~~पति~~ एवं शिवानुरागिनी पार्वती पर भी इस ~~पर~~ मधुर घटना की प्रतिक्रिया हुई — वह रोमाञ्चित हो उठी, उनके नेत्र कुछ लज्जावश नमित हो गए।

जितेन्द्रिय शिव ने ~~[illegible]~~ तुरन्त बलपूर्वक अपने को संयमित किया और अपने सहसा विकारग्रस्त हो जाने के कारण की खोज की। सामने लक्ष्यवेध-मुद्रा में कामदेव दिख गया और शिव ने तत्काल देवताओं के अनुरोध ~~[illegible]~~ को सुनने के पूर्व ही उसे अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से भस्म कर दिया। इस दुर्घटना से पार्वती को ~~सौन्दर्य~~ अपने सौन्दर्य की निष्फलता का आभास अवश्य हुआ, परन्तु वह खोए मन से अपने भवन को लौट जाती है। (तृतीयसर्ग तक)

B

इसके पश्चात् हृदयविदारक रतिविलाप होता है, किन्तु आकाशवाणी की प्रेरणा पर वह पार्वतीपरिणय की प्रतीक्षा करती हुई जीवित रहती है। आकाशवाणी ने उसे आश्वासन दिया कि पार्वतीविवाह के समय पुनः तुम्हें तुम्हारा पति मिल जाएगा।

इधर पार्वती ने मात्र सेवा से शिव को दुर्लभ जानकर तपस्या द्वारा उन्हें प्राप्त करने का निश्चय किया। उसने हिमालय के गौरीशिखर पर अपना तप आरम्भ किया। उसने सौन्दर्य के सभी उपकरण

श्री गणेशाय नमः
ऐं सरस्वत्यै नमः
ॐ क्लीं कृष्णाय नमः
नमः परमगुरवे
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

पार्वतीतपश्चर्या।

(नेपथ्यवागन्तरम्)

(प्रातःकालवेलायां शनैः शनैः सूर्योदये जाते शीतलमन्दसमीरसगुञ्जारवं भ्रमरावलीविचुम्बितपुष्पविकासोल्लासिवातावरणे हिमालयस्य सुरम्योपत्यकायां गिरिशंकरसंगता प्रसन्नवरदमुद्रान्विता भगवत्याः पार्वत्याः मूर्तिः क्रमेण दर्शकानां दृग्गोचरीभवति शंखघण्टाभेरीमृदंगनालादिवा~~[illegible]~~द्यध्वनिसंगतः 'ॐ नमः शिवाय', 'ॐ उमेश्वराय', 'ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः' इत्यादि मंत्रोच्चारध्वनिर्नेपथ्ये श्रूयते। तदनु प्रविश्य अर्चिकायुग्मेन पुष्पार्चनानन्तरं नृत्यगीतादिभिः भगवदाराधनं क्रियते।)

(दीर्घालापेन सह रागभैरव्यां मंगलाचरणम्)

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥ १॥

(पुनरालापेन सह रागमालकोशे)

(नेपथ्ये पार्वतीशंकराभ्यां नमः कामाक्षीकामेश्वराभ्यां नमः इति मंत्रोच्चारः इत एवाभिश्रूयते मन्दस्वरेण आलापेन सार्धम्)

विश्ववाद्या विश्ववन्द्या त्रिभुवनजननी विश्वकल्याणहेतोः
प्राणोत्सर्गपरायणं मनसिजं नेत्रयुग्मे दधार।
कामाक्षीत्वं गता या विरतिरतिकृतं रागरूपं परेशम्
कृत्वाऽजेयपदं चकार मदनं स्नेहार्द्रचित्ता सती॥ २॥

शोभासिन्धुविनिर्गतश्रियमिवानिन्द्यं वपुर्बिभ्रती
विश्वस्वस्तिकलाकलापकलिनी दृष्ट्वाऽपि दग्धं स्मरम्
स्वायत्तीकरणाद्धुरस्य तपसा पञ्चेष्वमत्येत्वदा
? विश्वाम्बा हिमजा शैलजा ~~सा~~ त्रिभुवनं~~मम्लं~~ कामरूपं विधातु विदध्यात्
(विश्वाम्बा शैलजा सा त्रिजगति विमलं काममूर्ध्वं प्रकुर्यात्)
अथवा विश्वाम्बा शैलजा सा त्रिजगति विमलं कामसाफल्यमीयात्)
॥३॥

पटाक्षेपः।

(द्वितीयं दृश्यम्)

(नगाधिराजहिमाद्रेः वन्यप्रदेशसमीप एव हिमवतः पर्वतीयं राजभवनम्। तस्मादेव स्थानात् दृश्यमाने सुदूरवर्तिनि पर्वतशिखर

सुरम्यमेकं लताकुञ्जं वर्तते । तस्मिन्नेव विरचिताश्रमः भगवान् शंकरः तपस्यानिरतः। राजभवने सिंहासनारूढौ मेनाहिमालयौ तरुणीपुत्र्याः विवाहचर्चासंलग्नौ । पितृसम्मुख एव किञ्चिद्दूरे (~~पार्श्ववर्ति- [illegible]~~) अप्रतिमसौन्दर्यविलसिता पार्वती जयाविजयाख्यसखीभ्यां सह विराजते तस्मिन्नेव समये श्रीमन्नारायणनामसङ्कीर्तनपरायणः वीणा-
ादनपूर्वकं देवर्षिनारदः प्रविशति)

(ससंगीतम्)

नारदः – (~~प्रविश्य~~) श्रीमन्नारायण नारायण नारायण !
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण ! ।।
प्रेरय निर्मलबुद्धिं नारायण नारायण ।
जगतः पालनकर्त्तः नारायण ! नारायण !
विधिहरवन्दितपद हे नारायण नारायण !
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण ।
भज रे मनसा वाचा नारायण नारायण ।
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण ।। ४।।

मैना — अहो ! श्रुतिपावनी भक्तिपीयूषवर्षिणी नारायणसङ्कीर्तनरागान्विता स्वरलहरी कुतः समाकर्ण्यते ?

हिमालयः — अये ! पश्य देवर्षिनारद इत एवागच्छति ।

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टो देवर्षिनारदः । सर्वे उत्थाय प्रणमन्ति । हिमालयश्च समुचितसत्कारपूर्वकं तमासने समुपवेशयति)

मैना – (अपवार्य हिमालयं प्रति)- स्वामिन् ! सर्वज्ञाः खलु श्रूयन्ते ऋषिजनाः । स्वपुत्र्याः भाग्यलक्षणानि प्रष्टव्यानि ।

(हिमालयः स्वीकारात्मकं शिरः सञ्चालयति)

हिमालयः – हे देवर्षे ! त्रिकालज्ञ ! निर्मोघगतिमान् सदा ।
ध्यात्वा दोषगुणान् पुत्र्याः कथ्यतां कृपया ततः ।। ५

नारदः – (निर्वर्ण्य) –
(सौकुमार्यं सलावण्यं सौन्दर्यमतुलं तथा)
सौकुमार्यं सलावण्यं निर्व्याजसुषमां पराम्
तारुण्यं शीलमप्यस्याः भूषयन्त्युज्ज्वला गुणाः ।। ६।।

सर्वलक्षणसम्पन्ना विश्ववन्द्या सुता तव ।
अर्धाङ्गिनी शिवस्येयं भवित्री नात्र संशयः ॥ ७ ॥

(साश्चर्यम्)
हिमालयः — भस्माङ्गरागी फणिभूषणोऽसौ दिगम्बरो मुण्डकलापधारी
गतस्पृहो भोगविलासशून्यैः परिग्रहीता स च किं सुतायाः ?
(गतस्पृहः श्रान्तविलासंवित् (संगः, संज्ञः) परिग्रहीता स च किं सुतायाः ? ॥ ८ ॥

मेना — (सासूयम्) कथं यथोक्तोऽशिवरूपधारी शिवः शिवाय क्षमेत सुतायाः
किमर्थकोऽनेन परिग्रहोऽपि विरागशीलेन जरद्धरेण ? ॥ ९ ॥

पाठान्तं ।(यस्य चिन्तनपीयूषो बहिर्विम्बच्छलात् विधुः ।
विराजः मनसो जातो भालभूषणतां गतः) | X

नारदः — चिन्तनाकेन्दुपीयूषो विराण्मानसनिःसृतः ।
बहिर्विम्बच्छलाद्यस्य भालभूषणतां गतः ॥ १० ॥

सर्वैश्वर्यप्रदाताऽसौ महादेवो जगत्प्रभुः ।
शिवत्वं तस्य नाऽऽशङ्क्यं वेषवैषम्यदर्शनात् (वीक्षणात्) ॥ ११ ॥

सविषोऽप्यमृताधूरः, शवमुण्डोऽपि पावनः ।
[illegible] भवापदां भवो हर्ता, समदृक्च विषमेक्षणः ॥ १२ ॥
~~विषमाक्षोऽपि~~ ऽसमाक्षोऽप्य समेक्षणः ॥

निरामयः त्रिशूली सन्, भैक्ष्यवृत्तिर्महेश्वरः ।
? चारित्र्यं महतां चित्रं चञ्चुचिच्चौर्यविभ्रमम् ॥ १३ ॥
(किञ्चित् अन्यमनस्क भावेन)

हिमालयः — महिमानं महेशस्य को नु शंसितुमर्हति ?
याच्ञ्या मोघत्वमाशङ्क्य नोत्सहे याचितुं शिवम् ॥

नारदः — दृढवैराग्यसंपन्नोऽपि रागवान् भक्तवत्सलः ।
पार्वती वल्लभः सैव समवाप्यो न संशयः ॥ १४ ॥
~~[illegible]~~ सुर्द्धोऽऽस्य शुभेच्छूनां नावमान्यः कथञ्चन ।
समर्थ दोषसंपन्न महाऽनिष्टफलाङ्कुरः ॥ १५ ॥
उमाप्यादौ सती दाक्षी पातिव्रत्यपरायणा
शिवापमानसंक्रुद्धा ससर्जेयं ~~[illegible]~~ स्वकं वपुः ॥ १६ ॥

अपरिग्रहस्त्वदारश्च मुक्तसंगो महेश्वरः ।
नित्यमुक्तोऽपि योगेशो योगमास्थाय संस्थितः ।

हिमालयः- (सम्प्रबुद्धोऽपि चिन्तान्वितः)
आत्मारामं समाधिस्थं दृढवैराग्यसंस्थितम् ।
आत्मजां ग्राहयिष्यामि कथं स्वीयां महेश्वरम् ॥१९॥

नारदः- दुराराध्योऽप्याशुतोष~~:~~तपश्चर्यावशंवदः
विश्वकल्याणरूपोऽसौ शंकरः शंकरिष्यति ॥२०॥

कार्यमेतन्न ते साध्यं सुतैवात्र तव क्षमा ।
पाठान्तर-(कार्यमेतन्न ते साध्यं शैलजैवात्र (पार्वतीतत्र) सक्षमा)
पराशक्तिः शिवस्येयं स्वोर्जितं भासयिष्यति ॥२१॥

तपसस्ते फलं दिव्यं सुताव्याजात् प्रवर्धितम्
व्याहृतित्रयसाकारा महाशक्तिकेमाद्भुता (संशयार्हा न पार्वती)
थवा- अभूमिः संशयस्येमा व्याहृतित्रयविग्रहा ॥२२॥

(इत्युक्त्वा साशीर्वचांसि प्रस्थानम्, सर्वे प्रणमन्ति)

संगीतम् – श्रीमन्नारायण ! नारायण ! नारायण !

~~तृतीयं दृश्यम्~~

(हिमालयः सस्नेहं साशीर्वादं पार्वतीं परिष्वज्य मनसा महादेवं प्रणम्य, हिमाद्रिशिखरस्थं ~~वन~~ वन्यकुञ्जस्थञ्च शङ्करं प्रति इङ्गयन्)

हिमालयः- पश्यात्मजे त्वं शिखरप्रदेशे वने सुरम्ये कृतवासदेवम्
युक्ता सखीभ्यां प्रणिपातपूर्वं सम्प्रानुहि प्रार्थनया परेशम् ॥२३॥

(~~प्रस्फु~~ प्रस्फुरितपूर्वजन्मसंस्कारसंरोहत्पुलका पार्वती निरूढभावं गूहयन्ती लज्जावनतमुखी पादाङ्गुष्ठेन भुवमुल्लिखन्तीव तिष्ठति)

हिमालयः- (जयाविजये प्रति) – नयतं स्वसखीं शिवाराधना।

जयाविजये- यथाज्ञापयति तातः। (पुनः परावृत्य पार्वतीं प्रति सहस्ताकर्षणम्।) एहि सखि ! गुरूणामादेशः शिरोधार्यः।
(सर्वाः सविनयं हिमालयं प्रणमन्ति)

हिमालयः- कल्याणमस्तु ।

(सखीभ्यां सह पार्वती निर्गच्छति)

मेना — (सोद्वेगं हिमालयं प्रति) —
न वेद्मि गूढार्थमहो प्रभो! यद् देवर्षिणोक्तं विषये उमायाः।
सुलक्षणैवेव सुता प्रदेया विचार्य तस्याः गुणशीलजातम् ॥२४॥
(क्षणं हिमालयो विचारमग्नः तिष्ठति, पुनश्च समागत्वा सितुमिच्छति
पर तत्पूर्वमेवाधीरभावेन मेना पुनः तं प्रति कथयति)

[illegible]
प्राणाधिका हैमवती प्रिया मे सुकोमला, रूपवती, सुलक्षणा।
सुखेषु नित्यं परिपालितेयं समाधिशैलाय कथं प्रदेया?
॥२५॥

किमर्थकं रूपमनिन्द्यमद्भुतं विरागिणो निष्फलवीर्यसन्निधौ
विवाहमेतन्न मतं मदीयं वरं कुमार्याचरणव्रतं चिरम् ॥२६॥
[illegible]

हिमालयः — मृषास्तथा नैव सतां गिरः क्वचित्
(मृषा न वाक् सच्चरितानां कदाचित्)
मुनेवचाँसीत्यवगम्य धैर्यात्
हरप्रसादाय सुतां सयत्नां
विचालयेन्नो तदेव सिद्धिः ॥२७॥

सङ्गीतम् —
भाग्याक्षरनिरासाय कः क्षमेत भवार्णवे
सजिता शैलजा येन स स्वोद्धर्तुमर्हति ॥२८॥
(सङ्गीतम्)

(तृतीयं दृश्यम्)

(देवदारुवनराजिमध्यात् उच्छलद्गङ्गाप्र
वनित हिमालयोपत्यकायां (नेपथ्यवाद्यस्वरम्) विजयोपगता श्रान्ता पार्वती तिष्ठति)

जया — (~~पार्वतीं प्रति~~) —
~~उपान्तमास्ते सखि ते मनोरथः~~
~~श्रमापनोदाय सुदुर्गमाश्रमम्~~
~~वयोर्निर्दिष्टप्रतियलसंश्रयात्~~
~~मयाक्षिनिर्वाणसुखं समाश्रितम् ॥२९॥~~
(सहर्षं सहसोत्थाय ~~किञ्चि~~ कानिचित् पदानि गत्वा)

पार्वती (विजयां प्रति) सुरम्य एतद् वनराजिसंश्रयः
पवित्रगङ्गोच्छलवीचिनिःस्वनः।
तदीयच्यारोक्षितदेवदारवो
वहन्ति गन्धं मृगनाभिसंभवम् ॥३०॥
(मिश्रितं प्राहृतम्)

९

सुदुर्गमारोहगतिक्रमोत्थितः
क्लमः समोदाऽऽयतसीकरान्वितात्
सुखानिलाद् ह्रासमुपैति सत्वरम्
जयां तदत्र प्रतिपालयावः ॥ ३१॥

(ततः प्रविशति जया । प्रविश्य सहर्षं पार्वतीं प्रति)

जया - उपान्तमास्ते सखि ते मनोरथः
श्रमं विनेतुं विषमाध्वसंभवम् ?
(श्रमापनोदाय सुदीर्घ (सुदुर्ग) - मध्व (मार्ग) जम् ।
वचोनिर्देशप्रतियत्न संश्रयात् (संविदा) .
मयाक्षिनिर्वाणसुखं समाश्रितम् ॥३२॥

चतुर्थं दृश्यम्

(वसन्तीश्रियं बिभ्रति कानने हिमालयस्योपत्यकायां नैकस्थलेषु ऋषिमुनयः तपोनिरताः सन्ति। एकतश्च महादेवः तपोनिष्ठः, तिष्ठतिपुरतश्च तपश्चर्यां भञ्जयितुं रतिकामयोः सङ्गीतं नर्तनं प्रवर्तितम्)

(पार्श्वरागानन्तरम्)

(नृत्यगीतम् त्रितालषोडशमात्रायां शब्दपरणम्)

रतिः — (कामदेवं प्रति)

मधुऋतुशोभनमुल्लसितं ननु
खगकुलकलरवकूजितविटपम्
कलितकुसुमकेसरवरविपिनम् ।
अहो! क्षणं लोकय प्रिय सुभगम्
देवदनुजखगमृगतरु -
सुमनिकर उत्फुल्लमनाः खलु ।
भुवनशिञ्जितरागम् मे शृणु ।
नर्तननादगतीं शृणु
नर्तनादगती शृणु रे ॥

(सङ्गीतापरिवर्तनपूर्वकं वसन्तरागे नृत्यगीतम्)

विलसति काननमिव्य समीरे !
~~मोदय प्रियतम इव्य समीरे~~
मोदय प्रियामामिव्य समीरे ।
माधविकासुरभीकृतचञ्चलसघनरसालरसाले
कोकिलकूजितभृङ्गविगुञ्जितशीतलवायुविशाले
स्पर्शनिमीलितनेत्रवती लषते मृग्मय मृगीरे ।
। आत्मः ति / लषिः परस्मैपदी
मोदय - - . . . . . -
रागवती करिणी कमलाकरतोयमुदस्य सुगन्धम्
सिञ्चति केलिवशात्करिवदनं मदयति मुग्धममन्दम् ।
भ्रमरावलिः प्रियापरिशीलनमेति विलासगभीरे
मोदय प्रियतम - - - -
किंपुरुषा मदनातुरचित्ताः वामालिङ्गनकामाः
पुष्पविकासिसुगन्धिनिकुञ्जे तांश्च लषन्ति सुरामाः
को न समागममिच्छति लक्षितकामधनुःशरतीरे ॥
मोदय प्रियतम इव्य समीरे ॥

कामदेव— (पार्वती को लक्ष्य कर रति के प्रति) → यमन राग में

नेत्रानन्दविवर्द्धिनी हृदि नवप्राणामृतं सिञ्चती (वर्षती)
स्रस्तां केसरमेखलां मम पुनश्चापस्य मौर्वीं पराम्।
श्रोणीकार्मुकरोपितामिव पुनः कुर्वन्त्यहो पार्वती,
देवीभ्यामनुभिसंगता वनभुवो चौर्यं दिशत्या ततम्॥१६॥

नेत्रों के आनन्द को बढ़ाने वाली, हृदय में नवजीवनामृत को बरसाती हुई मेरे धनुष की डोरी के समान कटिप्रदेश से सरकती हुई केसरनिर्मित करधनी को मानो पुनः नितम्ब रूपी धनुष पर आरोपित करती हुई एवं सखियों से अनुगत यह पार्वती समग्र प्राकृतिक वातावरण को पुनः सुविस्तृत चौर्य प्रदान कर रही है — यह आश्चर्य है!

निःश्वासाचितसौरभायततृषं बिम्बाधरासन्नगम्।
लीलाब्जेन निवारयौऽभ्रमवती सोद्वेगलोला दृशा॥(दुर्दम्य भृङ्ग सबले)॥ निमा
सौन्दर्यार्णवनिर्गतेव सुषमामूर्तेरभिख्या नवा,
लावण्येन रतिं विलज्जितवती मे सिद्धिमाशंसते॥१७॥

अपने निःश्वाससौरभ की विपुल पिपासा वाले एवम् अधरों के निकटवर्ती उच्छृङ्खल भ्रमर को भयवश लीलाकमल द्वारा दूर भगाने से थकी हुई, अतएव सौन्दर्य सागर से निकली, ~~नवीन~~ सुन्दरता की मूर्ति की नवीन शोभा-सी, तथा अपने लावण्य से रति को भी विशेष रूप से लज्जित कर देने वाली यह पार्वती मेरी लक्ष्यसिद्धि को सूचित कर रही है।